॥ श्रीहरिः ॥

लोकालोक

[संस्थापक -- शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्री]

लोकानालोकयन् दीप्त्या द्विजान् कुर्वन् वितन्द्रितान् ।
लोकालोकोऽयमुदितो दिवान्धान् धर्षयन् रुचा ॥

दूरभाष : २२४३२५

वर्ष २३] कमलानगर-दिल्ली, वैशाख : २०४० [अंक २

वेदामृत

धरा पर भेज दो आशीष

एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः ।
एभिर्वर्द्धसि इन्दुभिः ॥

(यजु० २६।१३)

भावानुवादः—

ज्योति की रेखा चतुर्मुख आपसे छिटकी मनोहर,
ज्ञानरवि द्योतित अहर्निश-रश्मियां जिसकी तमोहर,
नयन में है छलकते निश्छल सुपावन अश्रु मेरे,
वन्दना के मधुर-स्वर कल कण्ठ में गुंजित घनेरे
किन्तु अब हो मौन, महिमा गान के सब शब्द सोये,
हो गये विश्रान्त सारे भाव जो अब तक संजोये ।
हे हृदय वासी धरा पर भेजदो आशीष अपना,
पूर्ण हो जाये अभी तक है अधूरा देव ! सपना ।
गन्ध चन्दन की तरह फैली स्मरण की करुण धारा ।
अब करो स्वीकार, वन्दन और अभिनन्दन हमारा ॥

डा० वीराचार्य शास्त्री

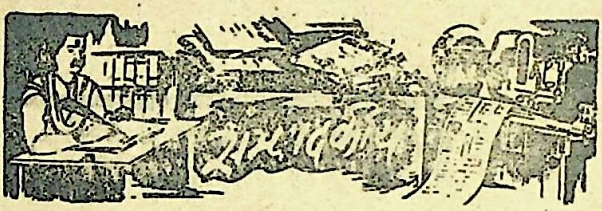

अन्दर भी कर उजाला

परम पूज्य श्री शास्त्रार्थमहारथी जी की पावन जयन्ती के अवसर पर प्रकाशित इस अंक में ऐसे संस्मरण संग्रहीत हैं जो उनके विराट् बहुमुखी व्यक्तित्व की झलक देने वाले हैं। विगत वर्षों में प्रचार यात्रा के अवसरों पर यत्र-तत्र-सर्वत्र अगणित ऐसे श्रद्धालु धर्मानुरागियों से भेंट होती है जिनका कभी महारथी जी से सम्पर्क हुआ। वे भावपूर्ण शब्दावली में उनका स्मरण करते हैं तथा उनकी सरलता निश्छलता, आत्मीयता एवं धार्मिक दृढ़ता की चर्चा करते हुए तन्मय हो जाते हैं।

महारथी जी ने अपना पूरा जीवन सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये अर्पित कर दिया। यात्राजन्य कष्ट को उन्होंने कभी कष्ट नहीं माना पिचासी वर्ष की आयु में भी सतत प्रवास पर रहे। उन्होंने अहर्निश लेखन स्वाध्याय में संलग्न रहकर ऋषिकल्प जीवन जिया। ऐहिक-आमुष्मिक प्रेय-श्रेय का अर्जन करके वे सनातन धर्म जगत् को 'लोकालोक' के रूप में सैद्धान्तिक मन्तव्यों का निर्भीकता से प्रतिपादन करने वाला ऐसा पत्र दे गये हैं जो विगत तेइस वर्षों से जागरूक प्रहरी का कार्य कर रहा है। महारथी जी जब तक मंच पर विराजमान रहते थे किसी का भी ये साहस नहीं होता था कि शास्त्रविरुद्ध अनर्गल बात कह सके उसी तरह शास्त्र विरुद्ध लेखन पर अंकुश का कार्य लोकालोक भी कर रहा है। वैयक्तिक राग द्वेष से निर्लिप्त रहते हुए स्वस्थ पत्रकारिता का उदाहरण उपस्थित करता हुआ यह पत्र जहाँ ठोस सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचा रहा है वहाँ धर्म विरुद्ध प्रलाप करने वालों के लिये अमोघ प्रभाव रखने वाली राम बाण औषध का कार्य कर रहा है।

चैत्र के अंक में हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि हमने कर्त्तव्य बुद्धि से धर्म सेवा का व्रत लिया है, हम यथासामर्थ्य, इस पत्र के द्वारा मिशनरी भावना से

धर्म प्रचार तथा भारतीय संस्कृति का प्रसार करते रहेंगे, लोकालोक अपनी ज्ञान रश्मियों का आलोक फैलाता रहेगा—

दुनिया भटक रही है, एक दौर है निराला।
बाहर तो रोशनी है, अन्दर भी कर उजाला॥

आज सामाजिक वातावरण विचित्र बन चुका है। व्यक्ति अपने दुःख से उतना दुःखित नहीं है, जितना दूसरे के सुख से दुःखी है। कहाँ तो वह समय था—

बन्धे धर्म के बन्धन में सब लोग जिया करते थे।
एक दूसरे का दुख हँस कर बाँट लिया करते थे॥

किन्तु समय के वक्र-चक्र ने सब कुछ बदल डाला। परिस्थिति बदली, वाताकरण बदला, मानसिकता बदली और बदलते-बदलते सब कुछ बदल गया। धार्मिकता, नैतिकता, परोपकारिता तथा पर दुःख-कातरता का स्थान वैयक्तिक स्वार्थ, लोभ एवं शोषण ने ले लिया—

लोभ-नागिनी ने विष फूँका, शुरू हो गई चोरी।
लूटमार, शोषण प्रहार छीना-झपटी बरजोरी॥

शास्त्रार्थ महारथी जी ने भारत एवं भारतेतर देशों में भी सनातन धर्म के आदर्शों निर्लोभता, आस्तिकता, सच्चरित्रता तथा समर्पण भावना आदि की पुनः स्थापना का सतत प्रयास किया-जिसे लोकालोक भी कर रहा है! दिनकर जी के साथ हम यह मान कर चल रहे हैं—

दुर्लभ नहीं मनुज के हित, निज वैयक्तिक सुख पाना।
किन्तु कठिन है कोटि-कोटि मनुजों को सुखी बनाना॥

इसके लिये साधु सन्त, महात्मा, विद्वान् धनी मानी-जन सामान्य सभी को जुटाना होगा। हम अपनी ओर से कुछ अधिक न कहकर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में यही कह सकते हैं—

० सन्तों! महन्तो! स्वामियो! गौरव तुम्हारा ज्ञान है,
पर क्या कभी इस बात पर जाता तुम्हारा ध्यान है?
कुछ वेष को भी लाज रक्खो, अज्ञता का अन्त हो,
भर कर न केवल उदर ही तुम लोग सच्चे सन्त हो॥

० धनियो ! भला कब तक व्यसन की बान छोड़ोगे नहीं,
अब और कब तक अज्ञता की आन तोड़ोगे नहीं।
कमला-विकास विलोलतर चपला-प्रकाश-समान है,
धन लाभ का साफल्य बस सत्कार्य विषयक दान है॥

जिस दिन धर्म का केवल दोहन करने वाले धर्म के लिये कुछ करने को तत्पर होंगे, धनी-मानी धार्मिक साहित्य के प्रकाशन को भी धर्म सेवा स्वीकार करेंगे उस दिन 'लोकालोक' की सोद्देश्यता को बल मिलेगा हमें अपने कार्य से जो सन्तोष-लाभ होता रहा है उसमें और अधिक वृद्धि होगी तथा नई पीढ़ी को शुभङ्कर की प्रेरणा मिलेगी।

तेइस वर्ष से घाटा उठाकर भी 'लोकालोक' निकालने में जो सुख, जो सन्तुष्टि हम अनुभव करते हैं यदि उसके कुछ सह-अनुभव-कर्ता कार्य क्षेत्र में सक्रिय हो गये तो हम अपनी धार्मिक गतिविधियों का अधिकाधिक विस्तार करेंगे।

प्रेरणा-प्रद जयन्ती

श्री पं० बालकृष्ण जी शर्मा 'धर्मालङ्कार'

परम पूज्य महारथी जी धर्म का इतिहास थे।
क्या नहीं थे वे कि, इस युग के महर्षि व्यास थे॥
दिग्विजय की, देश-देशान्तर स्वधर्म प्रचार से।
काँप उठते थे विरोधी, उनकी इक हुँकार से॥
धर्म, संस्कृति, सभ्यता, साहित्य की प्रति मूर्ति थे।
क्या कहें वे तो 'सनातन धर्म' की सम्पूर्ति थे॥
प्रेरणा-प्रद ये जयन्ती, जगत्-हित आदर्श हो।
चरण चिह्नों पर चलें उनके सदा उत्कर्ष हो।

क्यों ? (पूर्वार्द्ध)

—शास्त्रार्थ महारथी श्री पं. माधवाचार्य जी शास्त्री

आधारभूत मौलिक सिद्धान्त

ब्रह्माण्ड में अगणित वस्तु जात की जुदा-जुदा परीक्षा और समीक्षा करना सर्वथा असम्भव है। मनुष्य जीवन में विभिन्न वस्तुओं के वैलक्षण्य का निरन्तर अनुभव होते ही तत्काल यह 'क्या ?' यह 'क्यों ?' की परम्परा की भी कोई सीमा नहीं, ऐसी स्थिति में त्रिकालदर्शी महर्षियों ने थोड़े में सब कुछ समझ लेने की जिस परिपाटी का आविष्कार किया था उसका नाम—'सिद्धान्तवाद' है, एक मात्र इसी नाव के सहारे अनन्त पार दुस्तर तर्कसागर को पार किया जा सकता है। इसलिये हम इस अध्याय में प्रकृति के कुछ ऐसे अटल नियमों का उल्लेख करना चाहते हैं कि जिनको समझ लेने पर बहुत सी शङ्काओं का अपने आप समाधान हो जाता है। यह प्रघट्ट पढ़ने में बड़ा अटपटा प्रतीत होगा और साथ ही अनावश्यक सा भी जान पड़ेगा, परन्तु जैसे किसी भी ऊंचे प्रासाद की आधारभित्ति (नींव) टेढ़े-मेढ़े बिना घड़े बेडौल पत्थरों की होती हुई भी उस प्रासाद की मूल आधार होती है। उसका एक पाषाण निकाल लेने पर समस्त ऊंची अट्टालिकाएँ धराशायी हो सकती हैं, ठीक इसी प्रकार इस प्रघट्ट को भी उक्त ग्रन्थ की रीढ़ समझना चाहिए। पाठक यदि सावधानी से एक एक अक्षर का मनन करेंगे तभी वे आगे के समाधान' को समझ पायेंगे।

जड़ और चेतनवाद

(उभयं वा एतत् प्रजापतिः)

संसार में पत्थर मिट्टी पानी आदि वस्तुओं को 'जड़' कहा जाता है और पशु पक्षी मनुष्य आदि को 'चेतन' कहा जाता है परन्तु विचार पूर्वक यदि जड़ और चेतन का विश्लेषण किया जाय तो ऐसी एक भी वस्तु उपलब्ध नहीं होती जिसे केवल 'विशुद्ध जड़' या केवल 'शुद्ध चेतन' कहा जा सके। विधाता का यह सब का सब प्रपञ्च ही जड़ चेतन दोनों तत्त्वों के विमिश्रित सङ्घात का परिणाम है। यह हो सकता कि पाषाण आदि में जड़ तत्व का बाहुल्य है और चेतन तत्व उसमें विकसित नहीं हो पाया है परन्तु—वह सर्वथा और सर्वदा चेतन सत्ता से शून्य हो विज्ञानवेत्ता यह स्वीकार नहीं करते, क्योंकि वर्तमान युग के भौतिक शास्त्रवेत्ताओं-ने सनातन धर्म के पुरातन सिद्धान्त 'वृक्ष वनस्पति चैतन्य' को तो स्वीकार कर ही

लिया है। श्री जगदीश चन्द्र वसु आदि भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने यन्त्रों की सहायता से चैतन्य के लक्षण—देखना, सूँघना, सुनना, आदि क्रियाएँ वृक्षों में सुस्पष्ट दिखला दी हैं। जीवित पाषाण भी चेतनांश से अशून्य हैं इसके अनेक निदर्शन तो आर्य साहित्य में उपलब्ध होते हैं परन्तु भौतिक यन्त्रों द्वारा पाश्चात्य जगत् को विश्वास दिला सकने की परिस्थिति में हम नहीं हैं। पाषाण शब्द के साथ 'जीवित' विशेषण देखकर पाठक अवश्य चकित होंगे परन्तु उनको यह समझना चाहिए कि जैसे जीवित मनुष्य और उसका प्राणशून्य शव=लाश विभिन्न दो वस्तुएं हैं ठीक इसी प्रकार ह भरे वृक्ष और कटे सूखे लक्कड़, वृक्षों के जीवित और मृत कलेवर समझने चाहियें। इसी प्रकार पहाड़ के परिवर्द्धनशील पाषाण और उससे पृथक् हुए शिला वट्ट आदि समझने चाहियें।

कहना न होगा कि जड़ और चेतन दोनों तत्वों के विमिश्रण का नाम ही संसार है, गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रामायण में 'जड़ चेतन गुण दोष मय विश्व कीन्ह करतार' कहते हुए प्राचुर्य्य विकार और प्राधान्य अर्थ सूचक 'मयट्' प्रत्यय का प्रयोग करके इस रहस्य को प्रकट किया है। अर्थात्—यह विश्व जड़ और चेतन तत्त्वों का 'आवास' मात्र नहीं किन्तु यह तो उक्त दोनों तत्त्वों की प्रचुरता विकृति और प्रधानता के कारण 'तन्मय' है। इसलिये यह सर्वत्र सिद्धांत है कि विश्व में किसी भी वस्तु को केवल जड़ या केवल चेतन नहीं कहा जा सकता किन्तु यहां प्रत्येक जड़ चेतन से अधिष्ठित है और प्रत्येक चेतन जड़ का अधिष्ठान है। जिस वस्तु में उक्त दोनों में से जिस किसी एक तत्व का अधिक विकाश हुआ है उसी तारतम्य से 'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति' न्याय के अनुसार उसका वैसा नाम पड़ गया। जैसे हलवाई की दुकान में मैदा, घी, खांड, पानी, पत्तल, दोना, लक्कड़, कड़ाही, थाल अनेक तरह का सामान रहता है तथापि उसे व्यवहार में हलवा+ई =हलवे वाले की दुकान कहा जाता है। तथा चिड़िया, मोर, सिंह, व्याघ्र, ऊंट, घोड़े बनमानुस आदि अनेक प्रकार के जीवों से संकुल अद्भुतालय को 'चिड़िया घर' कहा जाता है ठीक इसी प्रकार स्थूलांश की अधिकता के कारण वृक्षादि को जड़ और सूक्ष्मांश की अधिकता के कारण मनुष्य पशु आदि को चेतन कहने की परिपाटी पड़ गई है। वस्तुतः जड़ से चेतन को और चेतन से जड़ को पृथक नहीं किया जा सकता ये दोनों तत्व प्रत्येक वस्तु में अपरिहार्य रूप विद्यमान रहते हैं। मुर्दा देह में भी प्राणवायु का सञ्चार वन्द होते ही 'धनञ्जय' नाम का वायु उसमें व्याप्त हो जाता है, इसी प्रकार 'जीव' भी पाञ्चभौतिक स्थूल शरीर को छोड़ते ही तत्काल 'वायु भूतो दिगम्बरः' के अनुसार दिव्य अथवा यातनामय शरीर से सम्पन्न हो जाता है। इस लिए विश्व की प्रत्येक वस्तु जड़ चेतन मय है।

श्री महारथी जी का एक अविस्मरणीय संस्मरण

—आचार्य श्री पं० रामचन्द्र जी शास्त्री, रामायणी

पंजाब में एक नगर है मुलतान। मुलतान और सिन्ध प्रान्त के मध्य में स्थित एक रियासत का नाम है बहावलपुर। उसका एक नगर डेरानवाब के नाम से प्रसिद्ध है। घटना हिन्दुस्तान के बटवारे से पूर्व की है।

डेरानवाब में प्रत्येक वर्ष सनातनधर्म पुत्री पाठशाला तथा गौशाला का महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था। जिसमें भारतवर्ष के बड़े-बड़े विद्वान महोपदेशक, संगीताचार्य और कविगण पधारा करते थे। दोनों संस्थाओं की प्रबंधक कमेटी एक ही थी। वे लोग मुझे दोनों ही उत्सवों में मुलतान (जहाँ श्री नृसिंह भगवान् का अवतार हुआ था) से बुलाया करते थे। एक बार पं० शान्ति प्रकाश जी अपने तीन साथियों के साथ पुत्री पाठशाला के उत्सव में हर वर्ष की भांति आमंत्रित करने के लिए मेरे पास पहुँचे। और मुझसे कहा कि प्रत्येक वर्ष इस अवसर पर सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की महोपदेशिका कृष्णादेवी जी पधारा ही करती हैं। इन वर्ष एक अन्य विदुषी का भी आप प्रबन्ध करा दें तो ठीक रहेगा। मैंने मुलतान नगर की एक प्रधानाध्यापिका की व्यवस्था करा दी। उस साल डेरानवाब के उस महोत्सव में बाहर से आने वालों की संख्या कुछ अधिक हो गई। बात यों बनी कि, सभा वालों ने सोचा, यदि कई विद्वान उत्सव के अवसर पर न आ सके तो वह ढीला रहेगा। अतः उन्होंने बहुतों को आमन्त्रित कर दिया। वे आ भी सारे गए। तो उस वर्ष उत्सव ने एक महासम्मेलन का स्वरूप धारण कर लिया। जिसमें जनता भी खूब जुटी। इस समय मुझे जिनका स्मरण आ रहा है, उनके नाम हैं—शास्त्रार्थ महारथी श्री पण्डित माधवाचार्य जी शास्त्री, गो० श्री बिन्दु जी महाराज, रामभक्त श्री पं० कपीन्द्र जी, आशुकवि श्री पं० कृष्णानन्द जी, संगीताचार्य पं० रामानन्द जी इत्यादि।

उस साल बोलने के स्थान पर मुझे मंच मंत्री का ही काम अधिक करना पड़ा। बोलने वाले अधिक थे। मैं तो उस संस्था के घर का ही एक व्यक्ति बन चुका था; उस उत्सव के अंतिम दिन स्थिति बड़ी गम्भीर बन गई। क्योंकि, जो देवी इस मंच पर पहली बार आई थीं, उन्हें मंच तथा परिस्थिति को परखने का विशेष अनुभव

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
अनुसंधान २-२३९४

नहीं था। यद्यपि उनके वैदुष्य एवं वक्तृत्वकला में कोई कमी नहीं थी। वह अपने भाषण में मुगल काल के अत्याचारों का जोरदार शब्दों में वर्णन कर रही थी। उनकी हिन्दी अत्युच्च श्रेणी की थी। वहाँ के उत्सवों में हिन्दु और मुसलमान एक समान भाग लिया करते थे। वहाँ की दोनों जातियों में परस्पर परम स्नेह था। उनके मन में कभी एक-दूसरे के प्रति मनमुटाव की घटना सुनने में नहीं आई। सभा के कार्यकर्ता तो इधर-उधर के प्रबंध में लगे हुए थे। देवी जी का भाषण लगभग समाप्त होने को था। उस समय का वातावरण वैमनस्यता का बनता जा रहा था। सभा वालों को इस स्थिति का पता चला तो वे मेरे पास आकर बोले कि, यहां कोई दंगा हो गया तो मुस्लिम रियासत में हमारा रहना भी दूभर हो जाएगा।

मैंने यह स्थिति श्री पं० माधवाचार्य जी महाराज के सामने रक्खी तो उन्होंने कहा कि,—चिन्ता मत करो। भाषण पूरा हो लेने दो, उसके बाद हम सारी परिस्थति को संभाल लेंगे। उनके सामने हमें चुप हो जाना पड़ा। परन्तु भीतर से सब का बुरा हाल था; कुछ समझ में नहीं आ रहा था। देवी जी के भाषण के पश्चात् मैंने श्रद्धेय आचार्य जी के नाम की घोषणा कर दी कि, अब उनका उपदेश होगा। हम सब की दृष्टि आचार्य जी पर लगी हुई थी कि, वे अब इस स्थिति को कैसे सुधारेंगे ? श्री माधवाचार्य जी महाराज ने भाषण के प्रारंभ में कहा कि—हिन्दु और मुसलमान भाइयो ! हम से पूर्व जो भाषण आपने सुना, उस की भाषा अत्यन्त गूढ़ थी। अतः उसका अभिप्राय शायद आप लोगों की समझ में न आया हो तो में उसका सार एक दोहे में सुना देता हूँ,—

दोनों भाई हाथ पद,-दोनों भाई कान।
दोनों भाई एक हैं, हिन्दू-मुसलमान॥

इतना सुनते ही सारा वातावरण प्रेम से भर गया और सब बोल उठे माधवाचार्य जी की जय हो, हिन्दु-मुस्लिम भाई-भाई····· सभा वालों का सारा भार हल्का हो गया। आगे का भाषण लोगों ने बड़े चाव से सुना। आचार्य जी के उन शब्दों ने अमृत का काम किया। शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० माधवाचार्य जी महाराज की तात्कालिक सूझ पर सारे विद्वान् अत्यन्त प्रभावित हुए।

सभा के अधिकारी वर्ग और वहाँ के हिन्दुओं का हृदय आचार्य जी के प्रति कृतज्ञता से भरगया! ऐसे थे हमारे आचार्य प्रवर !!

श्रद्धेय दादा जी की डायरी के कुछ पृष्ठ....

—श्री लोकेशाचार्य 'बटुक'

कलकत्ता शास्त्रार्थ—त्याग का आदर्श

कलकत्ता के निकट का काचरापाड़ा नामक स्थान में महारथी जी एक उत्सव पर गये थे, वहां कलकत्ता के भी कई धार्मिक सज्जन उत्सव में सम्मिलित हुवे। महारथी जी अभी कलकत्ता नहीं जा पाये थे, अतः उन सज्जनों से कलकत्ता में सनातनधर्म का संगठन कैसा है— पूछने लगे तो सभी ने एक स्वर से यही कहा कि महाराज कलकत्ता में यदि किसी सनातन धर्मोपदेशक का व्याख्यान रखा जाये और इसकी सूचना विज्ञापनों और ड्योंडियों द्वारा भी खूब दी जाये तब भी प्रतिष्ठित सज्जन नहीं जुटते, नगण्य सौ दो सौ श्रोता मुश्किल से इकट्ठे हो पाते हैं इसका कारण बताया कि कलकत्ता में जितने भी उपदेशक आते हैं वे प्रायः चन्दे चिट्ठे वाले बन मांगने आते हैं सर्वसाधारण में यह भावना बैठ गई है कि यह भी कोई चन्दा मांगने आया होगा।

महारथी जी ने जब कई कलकत्ता निवासियों से यह बात सुनी तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ कि देखो! इतने बड़े नगर में आस्तिक मारवाड़ियों के गढ़ में संगठन की यह दुर्दशा कि लोग चन्दे के भय से व्याख्यान सुनने भी न आएं। बस! आपने अपने मन-ही-मन में प्रतिज्ञा की कि अब मुझे अपने किराये से कलकत्ता जाना चाहिये, और वहां अपने व्यय से भोजन खाकर प्रचार करना चाहिये, देखें लोग कैसे नहीं जुटते हैं! काचरापारा उत्सव पर बड़गादो बम्बई वाले जगद्गुरु श्री देवनायकचार्य महाराज भी पधारे हुवे थे, महारथी जी ने स्वामी जी से अपनी भावना व्यक्त की जगद्गुरु जी बड़े भावुक और उत्साही महात्मा थे अतः स्वयं भी कलकत्ता चलने को उद्यत हो गये। माहेश्वरी भवन में विश्राम हुआ, रामरिछपाल झुन-झुनवाला आदि सज्जनों ने संकुचित मन से सत्यनारायण मन्दिर में व्याख्यान की सूचना दे दी। प्रथम दिन वही सौ-दो-सौ श्रोता आए, व्याख्यान सुना तो प्रभावित हुए, वे श्रोता ही विज्ञापन बन गए। दूसरे दिन पांच सात सौ आ गए। तीसरे दिन जब उस स्थान में जनता न समा सकी तब कानोडिया स्कूल के विशाल मैदान में सभा होने लगी। चालीस-पचास हजार श्रोता रात के बारह-बारह बजे तक टस-से-मस नहीं होते थे। स्थानीय आर्यसमाज सनातनधर्म के इस बढ़ते प्रभाव को सहन न कर सका। अपने स्वभावानुसार शास्त्रार्थ का चैलेन्ज दे दिया। लम्बे पत्र-व्यवहार के बाद मूर्तिपूजा विषय पर शास्त्रार्थ नियत हो गया। वातावरण गर्म था। अनेक धनीमानी सज्जनों ने खासकर जैनी सेठों ने मूर्तिपूजा विषय को सुनने के लिए वक्त

मैदान के निकटवर्ती मकानों की छतों पर अपनी-अपनी कुरसियें डलवाई जिससे सब कुछ सुनते और देखते भी रहें तथा संभावित लड़ाई-झगड़े से भी दूर रहें—सुना था कि उस समय कई छतों के मालिकों ने तो दस रुपया प्रति कुर्सी किराया उस रात्रि का वसूल किया। शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। आर्य समाज की ओर से श्री सुखदेव विद्यावाचस्पति थे, महारथी जी ने दो-तीन टर्न के बाद ही वहाशय जी को अप ने प्रमाणों और युक्तियों की वागुरा में ऐसा जकड़ा कि उनकी बोलती बन्द हो गई। अन्तिम पारी में शास्त्रार्थ के प्रभाव को शस्त्रार्थ के रूप में परिवर्तित करने के लिए कुचेष्टा भी की जाने लगी परन्तु जनता असलियत समझ चुकी थी अतः चारों ओर से सनातनधर्म की जयध्वनियों से दिशाएं मुखरित होने लगीं तब भैय्या लोगों के एक नेता ने जो कलकत्ता में पहलवानों के उस्ताद माने जाते थे महारथी जी से कहा कि महाराज आपका शास्त्रार्थ तो हो चुका जनता सब कुछ समझ गई। अब हमें आज्ञा दीजिये, ये लोग तो शरारत करना चाहते हैं, इन सबको सदा के लिए ठीक कर दें—मानते नाहीं। महारथी जी ने उक्त सज्जनों को रोका और कहा—देखो हारा जुवारी लड़ाई पर आमादा हुआ ही करता है। तुम अपनी पार्टी को शान्त रक्खो ये बकझक कर पांच मिनट में स्वयं चुप हो जाएंगे इनकी इस हरकत का भी हमारे हक में अच्छा ही प्रभाव पड़ रहा है। शास्त्रार्थ सम्पन्न हुआ। अगले दिन मूर्ति पूजा विजय से प्रभावित हुए जैनी भाइयों ने अपना सात मंजिल ऊँचा चांदी का रथ, जो कि केवल इनके तीर्थंकरों की मूर्तियों की शोभा-यात्रा के लिए होता है प्रदान किया। जगद्गुरु जी सहित आप उस पर विराजमान हुए। रेशमी रस्सों को हाथ में पकड़कर नगर के प्रतिष्ठित सेठ लोग ही इस रथ को खींच रहे थे। बिदायगी के समय पांच सौ रूपये, जरी का दुशाला आदि भेंट किया जाने लगा तो महारथी जी ने सुस्पष्ट कहा कि इस बार तो हम एक कौड़ी भी न लेंगे फिर कभी आएंगे चाहे लाखों देना, इस बार हमारा प्रण था कि हम अपना भोजन खाकर अपने किराए से यात्रा करके कलकत्ता में धर्मध्वज ऊंचा करेंगे। सेठों ने बहुत-बहुत आग्रह किया परन्तु महारथी जी अपने प्रण पर अटल रहे। स्थानीय विद्वत्परिषद् आदि संस्थाओं ने 'वेद वाचस्पति' व्याख्यान-पंचानन' आदि उपाधियों मानपत्रों और सुवर्णपदकों से सम्मानित किया।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

पुण्यलोक श्री माधवाचार्य जी

—श्री रामप्रसाद जी कौशिक एम. ए., साहित्याचार्य

पूज्य शास्त्रार्थ महारथी माधवाचार्य जी से उनके जीवन में मिलने की, बातचीत करने की कई स्मृतियाँ उनका पावन स्मरण करते ही सजीव हो उठती हैं पर यह मेरा दुर्भाग्य ही है कि मैं उन्हें मंच से कभी नहीं सुन सका। उनकी गुरु गम्भीर गर्जना का घोष सुनने से मैं वंचित ही रह गया। ऐसा विश्वास ही नहीं था कि वे हम लोगों को छोड़कर इतने जल्दी चले जाएंगे। मेरा प्रमाद ही इसमें मुख्य कारण रहा है।

महारथी जी दैनिक पत्रों को तथा समसामयिक सभी पत्रपत्रिकाओं को बड़े गौर से देखते रहते थे। उनका ज्ञान पुरातन संस्कृति का पोषण करने के लिए ही था पर वे अधुनातन जानकारी से और नये-नये तर्कों से ही अपने तीर पैने करते रहते थे। एक बार की बात है कि मैं अपने मित्र श्री अनन्तराम गौड़ हिन्दी-अधिकारी ब्रिटिश उच्चायोग के साथ उनसे मिला। गौड़ जी का नींद पर एक लेख उन्ही दिनों साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' में छपा था। संभव है कि 'खर्राटों' पर रहा हो। उसके साथ शयनकक्ष के गद्दे का एक चित्र भी छपा था जो अनुचित और अनावश्यक था। उक्त लेख के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। मिलने पर तुरन्त महारथी जी बोले कि मैंने आपका लेख तो देखा ही है पर उसके साथ का चित्र बहुत अच्छा है, यदि उसे न देते तो काम न चलता और लेख अपूर्ण ही रह जाता उनके इस व्यंग्य को सुनकर गौड़ जी सकुचा गए पर साथ ही बहुत प्रसन्न भी हुऐ कि महारथी जी ने भी उनका लेख पढ़ा।

एक दूसरी घटना याद आ रही है कि मैं दिल्ली की महानगर परिषद् के दिवंगत सदस्य श्री विष्णुदत्त जी के साथ महारथी जी से मिला, उन दिनों आपात काल के दिन थे, तब विष्णुदत्त जी सदस्य नहीं थे। जेल से मुक्त ही हुए थे। वे पण्डित जी से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और अपने बचपन को याद करते रहे जब वे महारथी जी के शास्त्रार्थ सुनने के लिए रामलीला मैदान में जाया करते थे। महारथी जी ने उनसे गांधीवाद पर इतनी सहिष्णुता पूर्वक बात की कि मैं दंग रह गया, विष्णुदत्त जी के मन को कहीं ठेस न पहुँचे, इसलिए उन्होंने गांधी जी के सत्पक्ष को ही उस दिन उजागर किया, जहाँ गांधी जी के विचारों से उनकी असहमति थी, उसकी गंध भी नहीं आने दी।

पं० प्रेम दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २ २०८४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

मृत्यु शैय्या पर पड़े-पड़े दादा दहलवी के नाम से राजनीतिज्ञों पर कविता के माध्यम से करारे व्यंग्य कसते रहे। मुझे याद है कि उन्हीं दिनों हिन्दू महासभा के प्रख्यात नेता पं. ब्रजेश जी कांग्रेस में आए थे, उन पर उन्होंने लिखा—

दिखलाते व्याख्यान में अपनी चोटी खोल,
आज सभी ने जान ली श्री ब्रजेश की पोल।
हिन्दू सभा को प्राप्त था भारत में बहुमान,
हाय ! नष्ट अब हो गया यह संगठन महान।

जब मैंने 'लोकालोक' का उक्त अंक ब्रजेश जी को दिखाया तो वे पुलकित हो गए और कहने लगे कि महारथी जी का मेरे ऊपर अपार स्नेह था जो अन्तिम दिनों में भी मुझे याद रखा। ब्रजेश जी ने कहा कि माधव ने ही माधवाचार्य के रूप में सनातन धर्म की रक्षा के लिए जन्म लिया था।

तीरथ राम अस्पताल में जब मैं उनसे मिलने गया तो असह्य वेदना होते हुए भी मुझे नमकीन और चाय खिलाने-पिलाने का आग्रह करते रहे, बोले आज मुझे विष्णु सहस्रनाम का सही अर्थ लगा है कि 'न वासुदेव भक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्—जन्ममृत्युञ्जराव्याधिभयं नैवोपजायते। कहने लगे कि मुझे तो मृत्यु जरा और व्याधि की पीड़ा का तनिक भी बोध नहीं हो रहा, भय तो है ही नहीं। जब नर्स उन्हें इन्ट्रावेनस इंजेक्शन लगाने लगी तो नारायण ! नारायण !! कहते हुए उन्होने 'शिरोरुबाहवे' का अर्थ पूछा और मेरे द्वारा गलत शिर अर्थ करने पर शिरा+उरु बाहवे, समझाया। उन्हें अनन्त नमस्कार !!

माधवाचार्य विज्ञः

माधुर्यालीढचेताः सुकृतकृतमतिः पारदृश्वागमानाम्,
धीरो वादीदीभसिंहः कलिमलमथनः प्रत्नधर्मैकधुर्यः।
साक्षाज्ज्ञानस्यमूर्तिः प्रकृतिमधुरवाङ् नीतिरित्यापरीत
आसीज्जेता नितान्तं प्रतिभट विदुषां माधवाचार्य विज्ञः॥

—धनीराम मिश्रः

अद्भुत् प्रतिभा के धनी शास्त्रार्थ महारथी माधवाचार्य जी महाराज

लेखक: —श्यामनारायण जी शास्त्री, सा० रत्न, मानसतीर्थ, रामायणी (वाराणसी)

वदनं प्रसादसदनं, सदयं हृदयं, सुधामुचो वाचः ।
करणम् परोपकरणम्, येषाम्, केषाम् न ते वन्द्याः ?

उक्त पंक्ति के प्रत्यक्ष उदाहरण 'सबके प्रिय सबके हितकारी' स्व० शास्त्रार्थ महारथी स्वनाम धन्य परम श्रद्धेय श्री पं. माधवाचार्य जी महाराज बीसवीं शताब्दी के सनातन धर्म जगत के समस्त विद्वद गुणगरिमा, प्रत्युत्पन्नमति सम्पन्न परम शास्त्रीय अप्रतिम सुयोग्य विद्वान् थे। उनकी रिक्तता की पूर्ति वास्तव में निकट भविष्य में तो अति कठिन ही दीख रही है। एक साथ शास्त्रार्थ भी प्रयुत्पन्नता, लेखन प्रवचन, एवं समाधान शैली का समग्र समन्वय ये वास्तव 'मणिकाञ्चन' योग था।

२३ वर्ष पूर्व जब मैं इटारसी म. प्र. में ही निवास करता था तो उस समय की एक घटना का संस्मरण प्रस्तुत कर रहा हूं। इटारसी नगर स्थित श्री राम मन्दिर के प्राङ्गण में विराट सनातन धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ था। जिसमें कई जगद्गुरु शंकराचार्य, अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मलीन स्वामी करपात्री जी महाराज एवं अन्यान्य सन्तजन, विद्वज्जन पधारे थे। स्वनाम धन्य शास्त्रार्थ महारथी जी भी पधारे थे। शास्त्रार्थादि का कार्यक्रम इन्हीं को ही सौंपा गया था। एक दिन दोपहर को जब ये भोजन करने पधार रहे थे तो संयोगवश एक आर्यसमाजी सज्जन के बिना रोक टोक के निस्संकोच भाव से सहसा कमरे में प्रवेश किया। और कहा कि पं० जी। मैं एक प्रश्न पूछने के लिए आया हूँ। और अधिक समय नहीं है। अतः समाधान तुरन्त ही लेकर चला जाऊँगा। मैंने कहा कि अभी भोजन कर लेने दीजिए फिर आपके प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। आचार्य जी ने कहा शास्त्री जी ! उन्हें मना न कीजिए इन महाशय के प्रश्नों का समाधान करके भोजन करने में मुझे परम प्रसन्नता होगी। और इतना कहते हुए थाली छोड़कर बाहर वाली चौकी पर आ बिराजे। और कहा महाशय ! आपका प्रश्न क्या है ? आप निश्चिन्तता से पूछें प्रश्नोतर निम्नलिखितहै :—

प्रश्न—क्या निराकार ब्रह्म साकार हो सकता है? जो निराकार वह साकार कैसे ?

उत्तर—महाशय ! जब निर्गताः सर्वे आकाराः यस्मात्, सः निराकारः। का अर्थ यह भी तो है। फिर जिससे सब आकार उत्पन्न हुए वह अपने लिए भी आकार समयानुसार धारण कर ले तो इसमें क्या आश्चर्य है ?

क्या आप कुछ गणित भी जानते हैं ?

जी हाँ—

फिर १०० में से ९० को ज़रा घटाइए तो—!

१०० में से ९० गया १० – शून्य में से शून्य गया कुछ नहीं फिर शून्य के शून्य।

क्यों जी ! जब शून्य में से शून्य गया बचा कुछ भी नहीं तो × काट दे।

शून्य ० कैसे बचा। कुछ नहीं, फिर शून्य चिह्न कैसे ?

महाशय जी ने कहा पं. जी ये तो आकार० शून्य का रखना ही पड़ेगा।

महाशय ! जब कुछ नहीं का आकार भी शून्य हो सकता है तो फिर जिसका सब कुछ ये संसार हैं, और जो सब कुछ है 'अजायमानो बहुधा विजायते, तो वह समय पर यथा आवश्यकतानुसार अनेक रूप धारण कर लेता है तो फिर आपके सिर में खुजली क्यों होने लगती है जी ?

महाशय जी समाधान पाकर वास्तव में सिर खुजलाते हुए ही शीघ्रता के साथ कमरे से बाहर चले आए। सत्य तो ये है कि—

प्रिय वाणी शीतल हृदय, संयम सरल आचार।
जो जन ऐसे जगत में, तासों सब को प्यार॥

वैसी प्रतिभा सम्पन्नता का महापुरुष इस समय तो—

"अब न आँखि तर आवत कोऊ।"

कृपया शुल्क भेजें

वैकुण्ठवासी पूज्य श्री महारथी जी

—श्री वैद्य कामता प्रसाद जी शर्मा

श्री आचार्य जी के एक प्रवचन ने मेरी जीवन धारा ही बदल दी। बात लगभग २८ वर्ष पूर्व की है जब मेरी आयु २४ वर्ष थी। मैं शासकीय सेवा में ले लिया गया था और अपने पदांकित स्थान पर कार्यरत था। वहीं पर मेरा सम्पर्क एक अर्ध-नास्तिक व्यक्ति से हुआ जिसके प्रभाव में आकर मैं भी उसी विचार धारा में ढल गया परिणाम स्वरूप मेरी आस्था श्रुति स्मृति पुराणोक्त विचार स्वतन्त्र एवं आचार परतन्त्र सत्य सनातन धर्म से डिगने लगी तथा मैं मूर्तिपूजा अवतारवाद मृतक श्राद्ध आदि सनातन सिद्धान्तों की खिल्ली उड़ाने लगा और वंश परम्परागत गृह में स्थापित अर्चा विग्रहों की अर्चना आदि से भी जी चुराने लगा जबकि पूज्य पितृ-चरण के वैकुण्ठवासी हो जाने से यह कार्य उनका एकाकी पुत्र होने के कारण आवश्यक रूप से करना चाहिये था। मेरी मातुश्री मेरे आचरण से दुःखी रहने लगी।

उन्हीं दिनों पुण्य सलिला श्री नर्मदा जी के उत्तर तट स्थान गोरा जि० रायसेन में ग्रीष्म ऋतु में वहाँ के सन्त द्वारा यज्ञ का आयोजन किया गया था मैं भी कौतूहल वश वहाँ गया और ग्रीष्म ऋतु के कारण छाया की इच्छा से प्रवचन पण्डाल में बैठा गया।

परमश्रद्धेय श्री महारथी जी का प्रवचन हो रहा था। उनके श्री मुख से धर्म के सिद्धान्तों की वैज्ञानिक व्याख्या सुनकर मैं अर्धनास्तिक से पूर्ण आस्तिक बन गया और उस प्रवचन से मनमन्दिर में ऐसा धर्म दीप प्रज्वलित हुआ जिसकी सनातन ज्योति अद्यावधि प्रज्वलित है और उन पूज्य चरण द्वारा लिखित धर्मदिग्दर्शनादि शताधिक ग्रन्थ रत्नों के स्वाध्याय रूपी स्नेह से अधिक प्रज्वलित रहेगी। जय धर्म।'

संस्कृत भाषा की अवनति का दुष्परिणाम

—श्री पं. कृपाराम जी गौरहा, वैद्यशास्त्री

संप्रति भारतीय शासन के द्वारा भारत वर्ष की मूलभाषा संस्कृत की उपेक्षा का दुष्परिणाम भयावह हो रहा है। भारतीय जनता पाश्चात्यशिक्षा को अपनाती हुई भारतीय संस्कृति से विरत हो रही है। उसके दैनिक खान पान वेशभूषा में अपथोचित परिवर्तन हो रहा है। स्नानादि नित्य क्रियायें अनावश्यक समझी जाने लगी हैं।

सत्य और सरल बोलचाल की भाषा नहीं रही इंग्लिश शब्द बाहुल्य का उपयोग गौरव की बात हो गयी है। सामिष भोजन, मद्य पान सामान्य व्यवहार हो रहे हैं। इन दुराचारों का एक मात्र कारण संस्कृत ग्रंथ रत्नों के पठन पाठन का अभाव तथा पाश्चात्य भाषा अंग्रेजी का प्रचार और प्रसार है। शासन के द्वारा संस्कृत भाषा उपेक्षित हो रही है उसके विद्यार्थी को शासकीय सेवाओं से वंचित होना पड़ता है। अंग्रेजी भाषा के स्कूल और कालेजों के द्वारा अभारतीय संस्कार डाला जा रहा है। अपनी भावी पीढ़ी को ईसायत प्रदान करने विधर्मी बनाने की उत्सुकता में भारतीय हिन्दु जनता अपने होनहार बच्चों को ऋषिकुल, गुरुकुल की शिक्षा न देकर कान्वेण्ट जैसी विधर्मी संस्था में प्रवेश दिलाने में अपना गौरव समझती है इसी प्रकार अब वैदिक मंत्रों द्वारा क्रिया संपन्न कराने वाले ब्राह्मणों का अभाव हो गया है। संस्कृत ज्ञान शून्य पौरोहित्य कर्मकाण्डों की संपन्नता बिना मंत्रों के ही देखे समझे नेगाचार से करते देखे जाते हैं अर्थात् क्रियालोप हो रही है। इन्हीं दुराराचरों को देखकर भारतेतर देशों के विधर्मी होने का कारण बतलाते हुए भगवान मनु ने कहा है—

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणानामदर्शनात् ॥

क्या भारत भी उन्हीं विदेशियों का अनुसरण कर रहा है?

क्या अपनी भाषा भूषा और शुद्धाचरण उसे ग्राह्य नहीं हो रहा है? भारतीय जनता आने वाले दुष्परिणामों को समझकर शासन की दुर्नीति को समाप्त करने हेतु शासन को बाध्य करे; और स्वयं भी मनसा वाचा कर्मणा संस्कृत भाषा के उत्थान में लग जाय तब ही भारत और भारतीय संस्कृति बच सकेगी अन्यथा परिणाम सामने है।

—०—

शास्त्रार्थ महारथी जयन्ती समारोह

स्थान—गीताभवन १५०, गुप्ताकालोनी (समीप कल्याण विहार)
दिल्ली—११०००९

सभी धर्मानुरागी-महानुभावों को यह जानकर हार्दिक परितोष होगा कि (वैकुण्ठवासी) शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्री के ८६ वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष की भाँति विशाल 'जयन्ती समारोह' वैशाख शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा २०४० तदनुसार (२३ मई से २६ मई १९८३) पर्यन्त आयोजित किया जा रहा है, जिसका उद्घाटन समाज सेवी श्री चौ० सूरत सिंह जी (अध्यक्ष दिल्ली नगर निगम स्थायी समिति) के द्वारा होगा। उक्त समारोह श्री शास्त्रार्थ महारथी जी द्वारा संस्थापित विभिन्न संस्थाओं एवं राजधानी की समस्त सनातनधर्म सभाओं के संयुक्त सहयोग से सम्पन्न होगा, जिसमें भारत के मूर्धन्य सन्तों, प्रवक्ताओं, मानस मर्मज्ञों तथा भजनोपदेशकों के साथ-साथ जगद्गुरु शंकराचार्यों एवं वैष्णवाचार्यों के पधारने की सम्भावना है। कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं—

१. जगद्गुरु रामानुजाचार्य यतीन्द्र स्वामी श्री रामानारायणाचार्य जी महाराज (अयोध्या)

२. अनन्त श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी सरस्वती महाराज (जम्मू)

३. अनन्त श्री स्वामी ज्ञानन्द सागर जी महाराज (जम्मू)

४. नासिक पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्री श्रीधराचार्य जी महाराज (नासिक)

५. श्री महामण्डलेश्वर स्वामी लक्ष्मणदास (यति) जी महाराज वेदान्ताचार्य

६. महोपदेशक श्री पं० नीलकण्ठ जी शास्त्री—भागवत भूषण

७. श्री पं० रामचन्द्र जी पाण्डेय मानस मनीषी (प्रताप गढ़)

८. श्री पं० शिव शंकर जी व्यास 'मानस मर्मज्ञ'

९. श्री पं० देवदत्त जी शास्त्री 'धर्मालंकार'

१०. श्री यशोनन्दनाचार्य जी गीतकार

इस समारोह में मानस अखण्ड पाठ वेद सम्मेलन, सनातनधर्म सम्मेलन, शास्त्रार्थ सम्मेलन, मानस सम्मेलन संस्कृत सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, और महिला सम्मेलन कार्यक्रम आदि सम्पन्न होंगे। आपका सर्वविध सहयोग तथा अनुग्रह अपेक्षित है। आप इष्ट मित्रों सहित सपरिवार आमन्त्रित हैं।

व्यवस्थापकः—	निवेदकः—	संयोजकः—
श्रीकण्ठ शास्त्री	वीराचार्य शास्त्री	प्रेमाचार्य शास्त्री
बालकृष्ण धर्मालंकार	(डा०) हरिदत्त तिवारी	प्रेम चन्द गुप्ता
के० डी० गौतम	अशोक पण्डित	दीपचन्द शर्मा

धर्म गुरुओं का लेखा जोखा ?

—शास्त्रार्थ पंचानन श्री प्रेमाचार्य शास्त्री एम० ए०

आज भारत के वर्तमान तथाकथित धर्मगुरुओं का लेखा जोखा करके उनकी सही संख्या का पता लगाना भूसे के ढेर में से सुई खोज लेने जैसा दुष्कर कार्य है। जगद्गुरुओं और पीठाधीश्वरों की अन्धी आन्धी में भोली भाली धर्मभीरु जनता सूखे तिनकों की तरह इधर उधर थपेड़े खाती भटक रही है। पाखण्ड वेशधारियों द्वारा अहर्निश किए जा रहे धर्म दोहन के इस घृणित खेल में धर्म एवं संस्कृति की विनाशलीला अब प्रत्यक्ष दृष्टिगत होने लगी है। पढ़े लिखे विचारशील श्रोता सत्संग तथा धर्म सम्मेलनों से इसीलिए किनाराकशी करने जा रहे हैं कि वहाँ से उन्हें कोई प्रेरक उद्बोधन कोई अनुकरणीय सन्देश अथवा धार्मिक सिद्धांतों की कोई तत्वात्मक व्याख्या उपलब्ध नहीं होती अपितु दम्भ वेशधारियों के अनर्गल अशास्त्रीय विचारों से भरे गुरुडम का ही दर्शन होता है। बाकी रहे सामान्य श्रोता, वे इस गुरुडम की धकापेल में दिशाहीन होकर हजारों खेमों में विभाजित होते जा रहे हैं। हिन्दू धर्म में आज जैसी अनवस्था और धींगामुश्ती इससे पहिले कभी देखने में नहीं आई थी।

कितने शंकराचार्य ?

पूर्व में गोवर्धन पीठ, पश्चिम में शारदापीठ, उत्तर में ज्योतिष्पीठ तथा दक्षिण में शृंगेरी पीठ पर प्रतिष्ठित महानुभाव ही शंकराचार्य पदवी से विभूषित होकर मान्य धर्माचार्यों की श्रेणी में परिगणित किए जाते हैं। इसी प्रकार वैष्णव संप्रदाय के अष्ट दिग्गज भी उसी श्रेणी में गौरवास्पद महत्व रखते हैं। धर्म के सम्बन्ध में इन महानुभावों द्वारा दी गई शास्त्रीय व्यवस्था ही प्रामाणिक एवं आचरणीय है।

किन्तु इन दिनों जब स्वयम्भू शंकराचार्यों की ही दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि होती जा रही है तब पीठाधीश्वरों का तो कहना ही क्या है? बरसात में मेढ़कों की तरह उनकी तो चारों ओर भरमार ही हो रही है। कानपुर के एक दम्भ वेशधारी महाशय, जो अपने धर्म विरुद्ध आचरणों के कारण सभ्य समाज में काफी बदनाम हैं तथा अ० भा० साधु समाज के अध्यक्ष ब्रह्मलीन श्री स्वामी गुरुचरण दास जी महाराज भरी सभा में बहुशः जिनकी भर्त्सना किया करते थे, आज स्वयम्भू शंकराचार्य बने जनता को धोखा देते हुए घूम रहे हैं।

वृन्दावन के एक टाटधारी पीठाधीश्वर ने तो ऐसे ठाठ दिखाए हैं कि क्या कहना ? इस कलुषानन्द कालनेमि ने गत वर्ष धूमधाम के साथ विधिवत् विवाह किया और सत्तर घाटों का पानी पीने वाली कदाचारिणी को संन्यासिनी पत्नी घोषित कर डाला। अब सुनने में आया है कि इस रण्ड-मुण्ड संयोग का कुफल (बच्चा) भी सामने आ गया है। ऐसे धूर्तराजों की जब तक चौराहों पर मोची-पत्र से पूजा नहीं होगी तब तक उनकी खोपड़ी दुरुस्त नहीं होगी। कहाँ तो शास्त्र-कारों का यह कथन कि—

पदापि युवतिं भिक्षुः न स्पृशेद्दारवीमपि।
स्पृशन् करीव बध्येत करिण्या अंगसंगतः॥

अर्थात्—संन्यासी को काठ की पुतली का भी पाँव से भी स्पर्श नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर हथिनी के लोभ से हाथी की भाँति उसका गहन गर्त में गिर जाना सुनिश्चित है।

—और कहाँ संन्यासी नामधारियों का यह कुत्सित आचरण !!

संन्यासाश्रम में प्रवेश कर लेने के बाद पुनः गृहस्थ सेवन करने वाले पाखण्डी मिथ्या तापस को आरूढ़ पतित अथवा वान्ताशी (थूक कर चाटने वाला) बता कर शास्त्रों में निन्दित किया गया है। आज के अधिकांश संन्यासी प्रत्यक्ष अथवा प्रच्छन्न रूप से "वान्ताशी" हैं जिनके मुख दर्शन से ही पाप का संचार होता है। हरिद्वार से ऋषिकेश तक का परम पवित्र विस्तीर्ण क्षेत्र मण्डलेश्वरों, महा-मण्डलेश्वरों, झण्डलेश्वरों, फण्डलेश्वरों किंवा रण्डलेश्वरों द्वारा आक्रान्त हैं जो अपने आश्रम अथवा कुटिया नामक एअर कन्डीशन्ड ऐयाशगाहों में ग्राम्य सूकरों की भाँति विलास लीलाओं में निमग्न हैं जिन्हें धर्म और संस्कृति की तनिक भी परवाह नहीं है। धर्मान्तरण द्वारा हजारों निर्धन हिन्दू मुसलमान या ईसाई बनाए जा रहे हैं, किन्तु उनके कानों पर जूँ नहीं रेंगती। गौरक्षा का ज्वलन्त प्रश्न सामने असमाहित पड़ा है, उनकी बला से। उन्हें तो अपने ही झमेलों से फुर्सत नहीं है। कच-खल के एक मण्डलेश्वर का एक नाइन को लेकर अपने चेले के साथ ही वर्षों से मुकदमा चल रहा है। विगत कुम्भ के अवसर पर निवृत्त शंकराचार्य नामधारी एक मुण्डी ने जब एक कुंवारी कन्या को संन्यास दीक्षा देकर चेली बना लिया तो बाकी मुण्डी मण्डल "अब तलक फैसला धनुष पे था अब फैसला है तलवारों पर" वाली मुद्रा में रोषाविष्ट होकर मैदान में उतर आया। रोष का कारण यह नहीं था कि एक कुमारी को शास्त्र विरुद्ध संन्यास दीक्षा क्यों दी गई अपितु इस पेतरे

बाजी का शर्मनाक पहलू यह था कि इस माल में हमें भी हिस्सा मिलना चाहिए। सम्पत्ति को लेकर मुकदमेबाजी तो प्रायः प्रत्येक आश्रम में चल रही है।

पीठाधीश्वरों की बाढ़

कार और चेली के बिना चूंकि पाखण्ड का चक्र नहीं चल पाता इसलिए आजकल सामान्य से सामान्य साधु भी स्वयं को पीठाधीश्वर घोषित कर डालता है।

हमें अपनी प्रचार यात्राओं में जहां तहां अजीबोगरीब पीठाधीश्वरों के दर्शन आज कल होने लगे हैं। फर्रुखाबाद पीठाधीश्वर, झूमरी तलैया पीठाधीश्वर, भनुआरोड पीठाधीश्वरआदि-आदि पीठाधीश्वरों की उपज यदि इसी रफ्तार से बरकरार रही तो निकट भविष्य में प्रत्येक शहर का प्रत्येक मुहल्ला-गली पीठ बन जाएगा। कोई आश्चर्य नहीं जब दिल्ली में चान्दनी चौक पीठाधीश्वर, कनाट प्लेस पीठाधीश्वर किंवा कनलानगर पीठाधीश्वर उत्पन्न हो जायें। इसी प्रकार भारत के अन्य शहरों के मुहल्लों का भी यही हाल हो सकता है। क्योंकि ऐसी आपाधापी में क्या संभव नहीं है ?

रामायण में एक ही कालनेमि की चर्चा मिलती है जिसने कट्टर राम भक्त तथा ज्ञानिनामग्रगण्य श्री हनुमान् जी को भी भ्रमित कर डाला था। आज के कालनेमि यदि भोली भाली जनता को धोखे में डाल रहे हैं तो उसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

मानस व्यास भी पीछे नहीं

आंधी के आम बटोरने में मानस-व्यासों में भी होड़ लगी हुई है। धर्मतत्वों के व्याख्याता अधिकारी शास्त्रीय मानसविद्वानों के अभाव में जब से कुछ छोकरियां उपदेशिका बन कर धार्मिक मंचों पर चढ़ बैठी हैं तब से धर्म सम्मेलन खिलवाड़ बन कर रह गये हैं। इन छोकरियों में अधिकांश पर किसी न किसी मानस व्यास की चेली होने का दुमछल्ला लगा हैं। चढ़ती उमर, भड़कदार साज सज्जा, लुभावनी टीर-टल्लो; आकर्षक अदायें तथा स्त्री-जन सुलभ मधुर स्वर लहरी के साथ जब ये तथाकथित मानस-मर्मज्ञायें मानस-गायन करती हैं तब उनके गुरु समेत पुराने घाकड़ रामायणी भी उनके आगे पानी भरने से लगते हैं इसलिये भरी सभा में अपनी फजीहत बचाने एवं अपना हलवा मांडा पक्का करने के लिये मानस व्यास वर्ग किसी चमकदार सुकन्या को चेली बना कर अपने भविष्य की गारन्टी तैयार करने में जुटे हैं। क्योंकि चेलियों की लल्लो चप्पो करने वाले सम्मेलनों के

आयोजक उनके संकेत पर उनके गुरुओं को भी आमंत्रित करने को विवश हो जाते हैं।

जो चेली बनाने में असफल रह जाते हैं वे बनी बनाई चेली का बेधड़क हो कर अपहरण कर डालते हैं। बिहार के एक रामायणी द्वारा किया गया उमा-हरण काण्ड अभी लोग भूले नहीं है। सुनने में आया है कि अपने पति की उक्त पापमय करतूत से क्षुब्ध हो कर उसकी साध्वी पत्नी ने आत्मदाह कर डाला है।

इस प्रकार धर्म प्रचार का पावन कार्य भी धीरे-२ एक धन्धा सा बनता जा रहा है। सच्चे संन्यासी-संत, विद्वान् शास्त्रीय महोपदेशक, विवेचक मानस व्यास, संगीत के साधक भोजनोपदेशक एवं, मान्य जगद्गुरु शंकराचार्य इस पाखण्डमय झंझावात में भी धर्मदीप को प्रज्वलित रखने के लिये निष्ठा पूर्वक कटिबद्ध हैं। चाहे ऐसे धर्म सेवकों की संख्या स्वल्प है परन्तु सर्वथा बीज नाश नहीं हुआ है।

पूज्य पितृ चरण शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्री महाराज द्वारा संस्थापित श्री सनातन धर्म दिग्विजय मण्डल इसी प्रकार के निष्ठावान् कट्टर धर्म प्रचारकों का संगठन है। हमारे प्रचारक निर्भीकता पूर्वक शास्त्रीय सिद्धांतों का प्रतिपादन करने वाले तथा गुरुडम को छिन्न भिन्न करने के लिये सर्वदा बद्ध परिकर हैं। धर्म विरोधी कोई भी हो, अपना या पराया, हम उसकी काली करतूतों का भाण्डा फोड़ने में कभी भी कोताही नहीं करते। धर्म रूपी अक्षय वट की जड़ों को जो पाखण्डी दीमक बन कर चाट जाने में लगे हैं उनके कुकृत्यों से जनता को सावधान करना हम अपना प्रथम कर्तव्य मानते हैं क्योंकि अपने साठ वर्षों के लम्बे धर्म प्रचार काल में श्री महारथी जी ने जिस नियम का दृढ़ता से पालन किया, अपने जीवन का वही मूलमंत्र वे हमें उत्तराधिकार में सौंप गए हैं। उनके जीवन का आदर्श वाक्य था—

न जातु कामान्न भयान्न लोभाद्धर्मं त्यजेज्जीवितस्यापि हेतोः

अर्थात्—किसी भी स्वार्थ, भय, लोभ किं वा प्राणों के लिए भी कभी भी धर्म का परित्याग नहीं करना चाहिये।

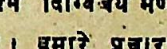

बुन्देलखण्ड का स्वर्गाश्रम

(विशेष संवाद दाता द्वारा)

झांसी से लगभग २० किलोमीटर दूर एक ऐतिहासिक नगर है-बरुवा सागर। यहीं झरना नाम से प्रसिद्ध स्थान पर बुन्देलखण्ड का भव्य स्वर्गाश्रम अवस्थित है जिसका निर्माण परम वीतराग, सनातन धर्म में संबल, विरक्त संन्यासी श्री स्वामी शरणानन्द सरस्वती महाराज ने अनेक वर्षों के अनवरत प्रयास के बाद जन सहयोग से सम्पन्न किया है। स्वामी जी के तत्वावधान में यहां दो बार १४ और १६ मास व्यापी अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन आयोजित हो चुके हैं जो जन जागरण के मूल मंत्र सिद्ध हुए हैं। संस्कृत विद्यालय, कर्मकाण्ड विद्यालय, गौशाला, निःशुल्क प्राकृतिक चिकित्सालय, सामूहिक विवाह आदि दर्जनों जनोपयोगी कार्य यहां चालू हैं। मनोरम प्राकृतिक परिवेश तथा समाजोद्धारक कार्यों के कारण यह स्थान अपने ढंग का अनूठा धर्म नगर बनता जा रहा था कि दैवदुर्विपाक से समस्त सूत्रों के प्रेरणास्रोत श्री स्वामी जी महाराज अचानक ब्रह्मलीन हो गए। विगत शरद पूर्णिमा से उन्होंने अठारह मास व्यापी अखण्ड संकीर्तन यज्ञ प्रारम्भ कराया था किन्तु ३ मास बाद ही उन्होंने अपनी लोक लीला संवरण कर ली।

स्वामी जी का ब्रह्मलीन होना धार्मिक जगत् पर अनभ्र वज्रपात के समान सिद्ध हुआ। आश्रम के कार्य कलापों को सुचारू रूप से चलाने का गुरुतम भार स्थानीय सज्जनों तथा स्वामी जी के कृपापात्र भक्तों पर आ पड़ा, जिसके लिये तत्काल संचालन समिति का गठन किया गया और स्वामी जी द्वारा प्रारम्भ किये गते समस्त कार्यों को चालू रखने की रूप रेखा तैयार कर ली गई। दान वीरों ने उत्साह पूर्वक सहयोग देने का आश्वासन देकर आर्थिक आधार भी सुस्थिर कर दिया। उससे समस्त आश्रम प्रेमी आश्वस्त एवं सुप्रसन्न थे कि अचानक महा विनाशकारी उपद्रव उपस्थित हो गया।

स्वर्गाश्रव पर धूमकेतु

स्वर्गाश्रम के निर्मल आकाश पर ओंप्रकाशानन्द नामक एक कपट शंकराचार्य धूमकेतु बन कर उदित हो गया। इस स्वयम्भू शंकराचार्य ने आश्रम की लाखों की सम्पदा के लालच में ब्रह्मलीन स्वामी जी की षोडशी क्रिया के सम्पन्न होने का भी इन्तजार नहीं किया और अपने दो चार क्रीत अनुयायियों द्वारा चादर ओढ़ कर स्वर्गाश्रम की महन्ताई हथियाने का नाटक कर डाला। यह आचार

विचार हीन एवं साधु समाज से बहिष्कृत आपा पन्थी छद्म संन्यासी स्वामी शरणानन्द महाराज का उत्तराधिकारी होने की तिल भर भी योग्यता नहीं रखता, यह विचार कर संचालन समिति ने कोर्ट के द्वारा उसे अधिकार च्युत किया और उसके आश्रम आने पर पाबन्दी लगा दी गई। आश्रम में उसका प्रवेश वर्जित करना इस लिये भी आवश्यक था क्योंकि यह नकली शंकराचार्य चारों पीठों के मान्य जगद् गुरु शंकराचार्यों को अपने भाषण में अप शब्द बक कर तथा नागाओं का दल लाकर आश्रम पर बलात् कब्जा करने की गुण्डागर्दी से भरी धमकियां देकर वातावरण को विषाक्त बना रहा था।

सुनने में आया है कि ओम्प्रकाशानन्द ने इन्दौर आदि नगरों में अपने आप को बुन्देलखण्ड स्वर्गाश्रम का सर्वेसर्वा बतलाकर चन्दा बटोरना भी चालू कर दिया है। हम इस सूचना द्वारा धार्मिक जनता को आगाह करते हैं कि वह ऐसे चन्दा चहो पाधयों से सावधान रहे। स्वर्गाश्रम के साथ ओं प्रकाशानन्द का कोई भी सम्बन्ध नहीं है। वहां का सब प्रबन्ध संचावन समिति के हाथों में है। किसी सुयोग्य, याचारवान् तपस्वी सन्यासी की खोज जारी है जिन्हें विधवत् आश्रम संचालन का कार्यभार सौंपा जासेक हम एतद् द्वारा यह भी सूचित करते हैं कि आश्रम के सभी कार्य कलाप अब यथावत् चालू हैं।

(१० पृष्ठ का शेषांश)

आरिफवाला (पंजाब) का मुबाहसा

यूं तो मौलाना लोगों की शास्त्रार्थों में अनेक स्थानों में पराजय हुई परन्तु आरिफवाला (संप्रति पाकिस्तान) का शास्त्रार्थ चिरस्मरणीय रहेगा। अहमदिया फिरके के मौलाना अब्दुल समद 'पुनर्जन्म' (मसला-तनासुक) पर बहस कर रहे थे महारथी जी ने दौराने मनाजरा दर्याफ्त किया कि 'ईजनाब मौत से खौफ खाते हैं या नहीं ? मौलाना ने तपाक से फर्माया कि यह भी कोई सवाल है, मौत से तो न सिर्फ रिन्द ही बल्कि चरिन्द-परिन्द सभी डरते हैं'। महारथी जी ने चुटकी लेते हुए कहा कि जनाबेमन् ! अगर आप अब से पहले कभी मरे नहीं—आपका मौत से वास्ता नहीं पड़ा। यह महसूस ही नहीं कि मौत मीठी या तलख कैसी है— फिर डरने का सवाल ही पैदा नहीं होता ! चूंकि आप मौत को खौफनाक महसूस करते हैं, इससे साबित होता है कि जनाब का मौत से साबका पड़ चुका हैं। बस इसी एक दलील के फन्दे में मौलाना ऐसे जकड़े गए कि सौ हाथ-पांव मारने पर भी छूट न पाए। मुंह पर हवाएं उड़ने लगी। हिन्दू धर्म के जयघोष से पिण्डाल गूंज उठा।

सरिता के कुतर्कों का उत्तर

(गतांक से आगे)

—आचार्य श्री पं. रामचन्द्र जी रामायणी

श्रीराम की चरणधूलि से शिला का नारी बन जाना लेखक जैसे बुद्धिमानों [१] की दृष्टि में चाहे सच न हो, परन्तु. प्रभु राम की ऐश्वर्य लीला में सच्चे बुद्धिमान भक्तों के (रामहि भजहिं ते चतुर नर) विचार में तो यह सौफासदी सत्य ही है। श्रीरघुवर के कर का चमत्कार शिवचाप के भंग करने में प्रगट होता है और उनके चरणकमल की महिमा अहल्योद्धार में दिखाई देती है। वाल्मीकि जी ने भी श्रीराम को विष्णु जी के अवतार के रूप में भगवान् माना हैं लेकिन लेखक महाशय बाल्मीकि जी के राम तो मानता है, किन्तु उन्हें भगवान मानने को तैयार नहीं तो उस की बुद्धि में ऐश्वर्यलीला कैसे समा सकती है ? इसी कारण वह अहल्या के शाप मुक्त होने का श्रेय परमात्मा राम को न देकर जीवात्मा गौतम मुनि को ही देता है। गौतम मुनि स्वयं अहल्योद्धार के बाद पत्नी के समेत उद्धारकर्ता प्रभु राम का पूजन करते हैं। उन्हें भगवान् मानते हैं वाल्मीरामायण-।१४६।१८।२१ में लिखा है कि, गौतम मुनि हिमालय पर तप करते थे। वहीं से यहां का हाल जान कर आये और अहल्या के विधिपूर्वक पूजन करने के साथ-साथ स्वयं भी श्री राम जी की विधिवत् पूजा की। अहल्या देवी ने पतिदेव के सामने प्रभुराम की भक्ति का वरदान भी माँग कर प्राप्त कर लिया।

जो अति मन भावा सो वर पावा गइ पतिलोक अनंदभरी।१।२१०।४)।

परन्तु यह लेखक अहल्योद्धार में श्रीराम का श्रेय मानकर श्रेय का पात्र क्यों बने ? भगवान् राम को कोई श्रेय दे या न दे, श्रेय उन से भिन्न है ही नहीं वे तो स्वयं ही श्रेयस्परूप हैं। वाल्मीकि रामायण में यदि शिला से नारी बनने की चर्चा नहीं तो इससे यह सिद्ध नहीं होता कि तुलसीदास जी के मानस में पाषाण से नारी बनने की घटना ही झूठी है। यह बात लेखक की समझ में तब आती जब वह पुराणों तथा रामचरितमानस के सिद्धान्त को समझ लेता। सिद्धान्त भी उसकी समझ में तब आता जब वह पुराणों एवं मानस का ध्यान से आद्योपन्त अध्ययन करता। पद्म पुराण में पुराणों के सम्बन्ध में लिखा है कि,-क्वचित्-क्वचित् पुराणेषु विरोधो यदि दृश्यते। कल्पभेद विधिस्तत्र व्यवस्था सद्भिरुच्यते ॥

अर्थात्-यदि पुराणों में कहीं-कहीं परस्पर विरोध दिखाई दे तो सत्पुरुष उसकी कल्पभेद से व्यवस्था समझा देते हैं। भगवान् वेदव्यास जी के इस मत को तुलसीदास जी भी मानते हैं। केवल तुलसीदास जी ही नहीं, सभी सनातन धर्मावलम्बियों को यह मत मान्य है। मानस, १।३२।४ में देखें—

कलप-भेद हरिचरित सुहाये। भांति अनेक मुनीसन्ह गाये॥
करिअ न संसय अस उर आनी। सुनिय कथा सादर रति मानी॥

प्रत्येक कल्प में राम एवं कृष्ण आदि का अवतार होता है। ब्रह्मा जी के एक दिन को कल्प कहते हैं। एक कल्प का काल मनुष्यों के चार अरब, बत्तीस करोड़ वर्ष का होता है। प्रत्येक कल्प की प्रभुलीला में कहीं-कहीं अन्तर भी होता जाता है।

अत एव तुलसीदास जी ने लिखा है कि कल्पभेद के कारण भगवान् के सुन्दर चरित्रों को मुनिजनों ने अनेक प्रकार से गाया है। यों समझ कर प्रभु की कथा में सन्देह नहीं करना चाहिये। उसे आदर और प्रेम पूर्वक सुनना चाहिये।

जैसे तुलसी रामायण में परशुराम जी तब मिथिला की रंगभूमि में आए हैं जब श्री राम द्वारा शिव धनुष टूट जाने पर राजा लोगों ने खलबली मचा रखी थी। किन्तु वाल्मीकि आदि रामायणों में धनुषभंग के महीनों बाद, वह भी बारात की वापसी पर मार्ग के सुनसान वन में परशुराम जी का आगमन हुआ है। ये दोनों बातें परस्पर विरोधी होने पर भी कल्पभेद से सत्य ही हैं। इसी प्रकार वाल्मीकि के अनुसार गौतममुनि ने अहल्या को यों शाप दिया कि, यहाँ कई हजार वर्षों तक केवल हवा पी कर या उपवास करके कष्ट उठाते हुई राख में पड़ी रहोगी, समस्त प्राणियों से अदृश्य रहकर इस आश्रम में निवास करोगी। जब दशरथ कुमार राम इस वन में पदार्पण करेंगे, उस समय तू पवित्र होगी, उनका आतिथ्यसत्कार करने से तेरे लोभ मोहादि दोष दूर हो जाएंगे और तू प्रसन्नता पूर्वक मेरे पास पहुंचकर अपना पूर्व शरीर धारण कर लेगी। गो० तुलसीदास जी ने लिखा है कि,—गौतम-नारी अहल्या ने शापवश पाषाण का शरीर धारण किया—गौतमनारी, स्रापबस उपलदेह धरि०। (मानस १।२१०)। कल्पभेद से यह दोनों बातें भी अपने-अपने स्थान पर ठीक ही है।

तुलसीदास जी की बात को मनगढ़न्त मानना मानस के अज्ञान का परि-

चायक है। यह बात तो वाल्मीकि रामायण से भी सिद्ध हो जाती है कि शाप के कारण अहल्या का पहले वाला कलेवर नहीं रहा। लेखक ने स्वयं लिखा है कि, गौतम ने कहा—श्री राम द्वारा तू पवित्र होकर फिर से पूर्व शरीर धारण कर लेगी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि, शापकाल की समाप्ति तक उसका पहले वाला शरीर नहीं रहा। तो इसी बीच में वह पत्थर के शरीर में रही-यह मान लेने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

जब लेखक ने यह भी लिखा है कि, महर्षि गौतम के पुत्र शतानन्द (जो राजा जनक के पुरोहित थे) ने विश्वामित्र जी से कहा कि, श्रीरामचन्द्र जी के दर्शन आदि के प्रभाव से मेरी माता शापमुक्त हो पिता जी से जा मिली हैं। (वाल्मी० ५१।७)।

उनके सुपुत्र तो अहल्या के शापमुक्त होने में श्री रामचन्द्र जी का ही प्रभाव मानते हैं, परन्तु सरिता का यह लेखक इस सत्य से अपने नेत्र मूंदे जा रहा है।

गौतम जी ने सोचा कि, शाप देने से मेरे तप का विनाश तो हो ही गया है। अतः अब मुझ में शाप मुक्त करने की शक्ति नहीं रही। तो अहल्या भगवान् श्री राम के चरण कमलों की रज के स्पर्श से ही शापमुक्त होगी। क्योंकि वे श्री राम के ऐश्वर्य को जानते थे। अतः अहल्या के उद्धार में श्रीराघवेन्द्र ही कारण बने तभी तो विश्वामित्र जी ने प्रभु राम से कहा कि,—गौतमनारी श्राप बस उपलदेह धरि धरि। 'चरन कमल रज चाहती कृपा करहु रघुवीर। (११।२६)। वाल्मी०-१।४९।१२ में महर्षि विश्वामित्र जी श्री रामचन्द्र जी से बोले—

तदागच्छ महातेज आश्रमं पुण्यकर्मणः।
तारयैनां महाभागामहल्याम्.....॥

अहल्योद्धार के पश्चात् अहल्या देवी और गौतम मुनि ने श्री रामचन्द्र जी का विधिवत् पूजन किया। वाल्मी० १।४९।२२—

गौतमोऽपि महातेजा अहल्या सहितः सुखी।
रामं संपूज्य विधिवत् तपस्तेपे महातपाः॥

क्योंकि भगवान् श्री राम ने अहल्या का उद्धार किया था। अतः दंपती ने उनकी पूजा की। आयु और वर्ण दोनों की दृष्टि से यह दंपती रामचन्द्र जी से आगे

थे। परन्तु श्रीराम परमेश्वर हैं और ये दोनों जीव हैं। अतः अहल्या तथा गौतम जी ने भगवान् समझकर श्रीराम की अर्चना की। ये दोनों पति-पत्नी इस उद्धार में श्री-रामचन्द्र जी को ही कारण मानते हैं और उन्हें परमात्मा समझते हैं। किन्तु यह लेखक इन दोनों बातों को नहीं मानता। केवल अपने हठ पर ही अड़ा हुआ है।

लेखक का यह मत भी भ्रांति से परिपूर्ण है कि, गौतम ऋषि श्री राम के जन्म से पूर्व ही थे। अतः गौतम द्वारा भक्ति का सवाल ही नहीं उठता।

१-श्रीराम तो सनातन पुरुष हैं। वे प्रकट तथा अन्तर्धान तो हो जाते हैं। परन्तु उनका जन्म मरण कभी नहीं होता। गौतम मुनि जीव । अतः उनका जन्म मरण दोनों होते हैं। जब गौतम जी का जन्म ही नहीं हुआ था, उससे बहुत पूर्व स्वायंभु मनु ने नैमिषारण्य में गोमती नदी के तट पर भगवान् श्री रामचन्द्र जी के दर्शन किये थे और उनसे अपने पुत्र बनने का वर प्राप्त किया था। मानस-१।१४५।८

भगतबछल प्रभु कृपानिधाना। विश्ववास प्रगटे भगवाना॥
भृकुटि विलास जासु जग होई। रामवाम दिसि सीता सोई॥ १।१४९।

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाऊ।
चाहउँ तुम्हहिं समान सुत प्रभुसन कवन दुराउ॥३।१४९॥

अतः श्रीराम के ऐश्वर्य की दृष्टि से यह लिखना कि, गौतम ऋषि राम के जन्म से पूर्व ही थे—यह बिल्कुल सत्य से परे है।

२-श्री राम की भक्ति तो ब्रह्मा, शंकर, अत्रि, वसिष्ठ, अगस्त्य भारद्वाज, वाल्मीकि, शरभंग आदि बड़े-बड़े देवता और ऋषि-मुनि भी करते हैं। तो गौतम द्वारा राममक्ति पर प्रश्नचिन्ह लगाना अत्यन्त हास्यास्पद है।

उमा राम सुभाउ जेहि जाना। तासु भजन तजि भाव न आना।
तप में बड़ा बल होता है। तपते अगम न कछु संसारा॥

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

गुरु-स्तवन

(राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर)

पद रज दो, अंजन दृग आँजूँ
अन्तर-तिमिर हरो हे !
अमृत-परस दो पल-पल चंचल
मन को अचल करो हे ! ॥

न्योछावर हो सकूँ चरण पर,
ऐसी विमल सुमति दो ।
उरके अन्ध-विवर में अपनी
जग-मग ज्योति भरो हे ! ॥

दृश्य-अदृश्य जहाँ जो कुछ है-
सभी तत्व गुरुमय हैं ।
एक प्रार्थना सुनो हृदय के ,
शत दल पर उतरो हे ! ॥

भक्ति-व्योम-गंगा के तट पर
नीराजन जलते हैं ।
चिदाकाश में पूर्ण चन्द्र सम
योगिराज, विचरो हे ! ॥

भीग रहे सब अमृत दृष्टि में,
सबके भाग्य जगे हैं ।
कृपा करो अवढ़र-दानी
मुझ पर देव, ढ़रो हे ! ॥

---

० उठे जहां भी घोष शान्ति का, भारत स्वर तेरा है,
धर्म दीप हो जिसके भी कर में वह नर तेरा है ।
तेरा है वह वीर सत्य पर जो लड़ने जाता है,
किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है ॥
मानवता के इस ललाट-चन्दन को नमन करूँ मैं ।
किस को नमन करूँ मैं भारत ! किसको नमन करूँ मैं ।

(दिनकर के गीत से साभार)

आपके पत्र

० श्री पं० विजय शर्मा (मारीशस)

"लोकालोक भारतीय संस्कृति का वास्तविक प्रतिनिधि मासिक पत्र है। मैं इसकी निर्भीकता से बहुत प्रभावित हूं।"

० श्री दौलत राम शर्मा (मारीशस)

"लोकालोक मासिक प्रवासी बन्धुओं का का मार्गदर्शक है। हम प्रतिमास उत्सुकता से प्रतीक्षा करते हैं।"

० श्री सुबोध 'जेतली' (दिल्ली)

"इस मास का 'लोकालोक' मिला। पढ़कर अन्तरंग आनन्दानुभूति हुई। पवित्रतम उदात्त अध्यात्मक भावनाओं के लेखों से मण्डित, मनोरम कविताओं से पूर्ण यह पत्र स्तुत्य है। सरिता के कुतर्कों का उत्तर वास्तव में हमारी ज्ञान-वृद्धि तथा श्रद्धा-वृद्धि में सहायक है।

० श्री सूर्यप्रताप सिंह (नेपाल)

हमारे विश्वगुरू भारत की मूलविद्याओं में आस्थाएं, मूल्य निहित है, उनका संगम है 'लोंकालोक'

० श्री प्रकाशचन्द पुरोहित 'जयदीप' (गोपेश्वर-चमोली)

"ऐसी स्वस्थ प्रेरणाप्रद, दिशाबोधक पत्रिका से मुझे अन्तरतम गौरव है। आपके सत्प्रयास हेतु आभार....."

० श्री मधुर 'कवि' (गाजियाबाद)

भ्रान्तियों की मलिनता को दूर करता, युग-युगों के तमस् का बहुभार हरता
सरलता से ज्ञान गरिमा सतत भरता, आज 'लोकालोक' मानव भद्रकर्ता॥

० श्री चन्द्रमोहन रणजीत सिंह (सूरिनाम द० अमेरिका)

"लोकालोक का हर अंक नई जानकारी देता है, हमारे मन में भक्तिभाव भर देता है, भेजा करें कृपया नियमित, बिना मिले होता चित चिन्तित।

० श्री कृपाराम गौरहा 'वैद्य शास्त्री (भाटापारा)

देववाणी रसामृत' स्तम्भ का प्रभाव खटकता है, आपकी साधना सराहनीय है, 'लोकालोक' की उन्नति चाहता हूं। श्री महारथी जी का स्मारक है ये।

छलना हो

श्री रामप्रसाद जी कौशिक

अब कभी दिल्ली जाता हूं
तो लगता है कि दिल्ली अपनी नहीं
परायी है
दिल्ली ! तुम दूध सी उजली हो
पर मेरे देश के गांव और कस्बे तो मटमैले हैं !
तुम को तुम्हारी गंदगी को—
सुनहरे पर्दों से ढक दिया गया है !
पर मेरे भोले बच्चे नंगे हैं
मेरी बेटियाँ बहुएँ
तो पर्याप्त कपड़ों के अभाव में
किसी तरह अपनी लाज ढकती हैं
तुम्हारे फ्लाई ओवरों की ऊंचाई
तो मेरे मनोरथों से भी ज्यादा है
मैं तो कल्पना में भी उतनी ऊंची
उड़ान नहीं भर सकता
तुम्हारे बहुमंजिले भवन
बढ़ते ही जाते हैं
पांच सितारों वाले होटलों को
मैं दूर से टुकुर टुकुर देखता रहता हूं
वहाँ मेरा प्रवेश वर्जित है
या तो तुम मेरे गरीब देश की राजधानी नहीं हो
या सुदामा की तरह मुझे ही भ्रम हो रहा है !
तुम मेरी ही हो, पर मेरे गाँव-घर तो
सोने के नहीं हुए !
वहाँ मेरा कोई स्वागत भी नहीं करता
तुम अपते रूप पर इठला रही हो
रूप गर्विता हो ! रूप जीवना हो !! परकीया हो !!!
तुम्हे अपने गाँव-कस्बों से क्या लेना देना
तुम तो दूसरों को मोहित करती हो
अप्सरा हो ! मोहिनी हो !! छलना हो !!!

श्री सनातन धर्म दिग्विजय मण्डल द्वारा धर्मप्रचार

जम्मू—श्री रघुनाथ मन्दिर के मनोरम प्रांगण में नवरात्र समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ। समारोह का आयोजन श्री धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा दिया गया था। नव संवत्सर के दिन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री डा० कर्णसिंह ने महर्षि वाल्मीकि की नव प्रतिष्ठापित मूर्ति का अनावरण किया। जम्मू-कश्मीर की दो दिवसीय यात्रा पर पधारी हुई प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी श्री रघुनाथ जी के दर्शनार्थ मन्दिर में उपस्थित हुई। शास्त्रार्थ पंचानन श्री प्रेमाचार्य शास्त्री के धर्म की वैज्ञानिक व्याख्या करने वाले प्रभावशाली प्रवचनों का क्रम श्री रामनवमी तक प्रतिदिन सम्पन्न हुआ। धर्म तत्वों की जिज्ञासु जम्मू की परिनिष्ठित जनता ने समारोह में सोल्लास भाग लिया। मन्दिर के मुख्याधिष्ठाता पं० श्रीशंकर जी शास्त्री समारोह के संयोजक थे जिनका आतिथ्य स्तुत्य तथा अनुकरणीय रहा।

दिल्ली—श्री भैरव मन्दिर (कालका जी) के विशाल प्रांगण में नव-दीक्षित योगी श्री सुरेन्द्रनाथ जी महाराज की तत्त्वावधानता में दुर्गार्चन एवं रामनवमी का भव्य समारोह सानन्द सम्पन्न हुआ। कालका मन्दिर के महन्त श्री परमपूज्य रामनाथ जी महाराज का सर्वविध आशीर्वाद उपलब्ध रहा। शास्त्रार्थ केसरी डा० वीराचार्य शास्त्री एम. ए., पी.एच. डी., आचार्य श्री पं० रामचन्द्र जी शास्त्री रामायणी, श्री बंगाली बाबा जी आदि के सुमधुर प्रवचनों से जनता ने धर्म लाभ प्राप्त किया। अनेक नगर पार्षद तथा महानगर पार्षद भी यज्ञ में आशीर्वाद प्राप्त करने श्रद्धापूर्वक आये। प्रतिदिन सहस्त्रों श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया जाता रहा। पूर्णाहुति के अवसर पर मांगलिक वर्षा भी हुई। श्री महेन्द्र जी एवं श्री सतीश जी का अतिथ्य तथा सेवाभाव स्तुत्य रहा।

उनाव दतिया—बाला जी नाम से विख्यात ऐतिहासिक सूर्य मन्दिर के प्राँगण में भव्य मानस सम्मेलन का आयोजन किया गया। अध्यक्षता काशी के प्रजाचक्षु विद्वान श्री गिरिधर मिश्र ने की। सम्मेलन में पुरी पीठाधीश शंकराचार्य जी के साथ शास्त्रार्थ पंचानन श्री प्रेमाचार्य शास्त्री, श्री विनीत बिहारी दास जी, मानसमल्ल श्री ललन लाल तिवारी, श्री वैदेहीशरण जी प्रभृति सुवक्ताओं ने

भाग लिया तथा जनसमुदाय को सामयिक उद्बोधन प्रदान किया। सम्मेलन की सफलता का श्रेय श्री महेश शुक्ल, श्री नाथूराम चतुर्वेदी, श्री शिवनारायण सक्सेना आदि समर्पित महानुभावों को है।

जम्मू (तवी)—स्थानीय श्री रघुनाथ मन्दिर के भव्य प्रांगण में श्री सनातन धर्म सेवासंघ की ओर से हनुमज्जयन्ती का विशालस्तर पर आयोजन किया गया। श्री शैलेन्द्राचार्य जी रामायणी की सत्प्रेरणा से सम्पन्न इस उत्सव में सहस्त्रों श्रद्धालु श्रोता रात्री के एक बजे के बाद तक भी सोल्लास तन्मय होकर धर्म लाभ करते रहे। श्री स्वामी आनन्द सागर जी महाराज भी कृपापूर्वक पधारे। शास्त्रार्थ केसरी डा० वीराचार्य शास्त्री के सैद्धान्तिक प्रवचनों की धूम रही और बुद्धिजीवी वर्ग अत्यन्त प्रभावित हुआ। श्री यशोनन्दाचार्य जी एवं बहिन वीणा-पाणी जी के सरस भजनों का आनन्द भी जनता ने प्राप्त किया। संकीर्तन कला-निधि श्री काश्मीरीलाल जी शास्त्री के संकीर्तन ने उत्सव को भक्तिमय बना दिया। श्री वेदप्रकाश जी दिग्गज ने सामयिक उद्बोधन पूर्ण संयोजन किया। नगर की धार्मिक गतिविधियों के सूत्रधार मन्दिर के मुख्याधिष्ठाता श्री पं० श्रीशंकर जी शास्त्री का आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य अत्यन्त स्तुत्य रहा। ✻

(२७ पृष्ठ का शेषांश)

अतः तपोबल से किसी को जड़ बना देना कोई असंभव बात नहीं है भगवान् के लिये जड़ को चेतन बना देना तो उन बायें हाथ का खेल है।

जो चेतन कहँ जड़ करइ, जड़हि करइ चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायक हि भजहिं जीव ते धन्य॥
तृनते कुलिस, कुलिस तृन करइ ॥

अहल्या के प्रकरण पर आध्यात्मिक दृष्टि से विचार करें तो हमें उत्तमशिक्षा मिलती है गौतम धर्म और इन्द्र भोग का प्रतीक है। और अहल्या बुद्धि का प्रतिनिधित्व करती है। बुद्धि धर्म पर स्थिर बनी रहे तो उसकी चैतन्यता बनी रहती है। जिसके फलस्वरूप जीव को परमपद की प्राप्ति होती है। यदि वह धर्म से विमुख होकर भोग में आसक्त हो जाए तो उसमें जड़ता आ जाती है। जिसके परिणाम में जीव की अधोगति अवश्यंभावी है। अंत में भी बुद्धि का परमेश्वर से संपर्क हो जाए तो जीव को सद्गति की प्राप्ति होती है। (क्रमशः)